IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

श्रीमद्भगवद्गीता के जीवन मूल्यों का माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास पर प्रभाव का अध्ययन

[1] **अनीता शर्मा**, [2] **डॉ सुरेखा जैन**

[1] शोधार्थी, शिक्षा संकाय, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन

[2] प्राचार्य (शिक्षा विभाग), महाराजा शिक्षा महाविद्यालय, उज्जैन

सारांश

श्रीमद्भगवद्गीता वैदिक ज्ञान का सार है और विश्व की सबसे प्राचीन जीवित संस्कृति है। श्रीमद्भगवद्गीता के 18 अध्यायों में 700 श्लोक है जिसमें संपूर्ण वेदों का सार संग्रह है। ज्ञान, कौशल और मूल्यों का समावेश करते हुए शिक्षा हमें जीवन में सफलता प्राप्त करने और एक बेहतर समाज का निर्माण करने में मदद करती है। श्रीमद्भगवद्गीता आध्यात्मिक ज्ञान, आत्म साक्षात्कार, नैतिकता, आत्मसंयम, स्वधर्म पालन, आत्मा विकास, निष्काम कर्म, सर्वभूतसमदर्शिता का मार्ग प्रशस्त करता है। जीवन मूल्य वह सिद्धांत और आदर्श होते हैं जो हमारे जीवन को दिशा एवं व्यवहार प्रदान करते है। ईमानदारी, निष्ठा, अनुशासन, समय प्रबंधन, आत्मअनुशासन जैसे जीवन मूल्य हमें नैतिक रूप से जीने की प्रेरणा देते है। शोधकार्य का मुख्य उद्देश्य श्रीमद्भगवद्गीता में अन्तर्निहित जीवन मूल्यों का माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में व्यक्तित्व विकास के प्रभाव का अध्ययन करना था। शोधकार्य में 20 शासकीय एवं 20 अशासकीय विद्यालयों में से माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत्त कक्षा नवमी एवं दसवीं के 860 विद्यार्थियों को शामिल किया गया था। शोध से ज्ञात हुआ कि श्रीमद्भगवद्गीता में वर्णित कृतज्ञता, परोपकार, आत्मनिर्भरता, त्याग, निस्वार्थता, ईमानदारी, संयम, अनुशासन, सहनशीलता, विनम्रता और सेवा जैसे जीवन मूल्यों माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के नैतिकता, सत्यनिष्ठा, करुणा, आत्मसंयम, आत्म-नियंत्रण, कर्तव्यपरायणता, दृढ़ता, परस्पर और सहयोग जैसे व्यक्तित्व के गुणों का विकास पर सकारात्मक प्रभाव हो रहा है।

I. भूमिका

गीता वैदिक ज्ञान का सार है और गीता को विश्व की सबसे प्राचीन जीवित संस्कृति माना गया है और भारत की महान धार्मिक सभ्यता के प्रमुख साहित्य प्रमाण के रूप में देखा जा सकता है। श्रीमद्भगवद्गीता के 18 अध्यायों में 700 श्लोक हैं। इसमें संपूर्ण वेदों का सार संग्रह किया गया है। भगवान के गुण, प्रभाव, स्वरूप, तत्व रहस्य और उपासना तथा कर्म एवं ज्ञान का वर्णन जिस प्रकार इस गीता शास्त्र में किया गया है वैसा अन्य ग्रंथों में एक साथ मिलना कठिन है। श्रीमद्भगवद्गीता के प्रथम 'भगवत' शब्द का अर्थ भगवान है और दूसरे 'गीता' शब्द का अर्थ गीति या गान है। इस अर्थ के भी दो भाव हैं - प्रथम , वह गान जो भगवान ने गाया हो , द्वितीय अर्थ में वह गान जो शब्द भगवान् का गुणानुवाद हो। वास्तव में ये दोनों ही भाव सार्थक हैं क्यूंकि जो शब्द भगवान् श्रीकृष्ण के मुखारविंद से निकले और गीता रूप में प्रकट हुए, उनको भगवान का गीत कहना उचित ही है और उनका यह गीत जीवात्मा और परमात्मा का सम्बन्ध एवं मनुष्य का अपने रचयिता तथा उसकी रचना के प्रति कर्तव्य बतलाता है। गीता भगवान का श्वास, हृदय और वाङ्मयी मूर्ति है। जिसके हृदय, वाणी, शरीर तथा समस्त इंद्रियों और उनकी क्रियाओं में गीता समाहित हो जाती है, वह पुरुष स्वयं गीता की जीवंत मूर्ति बन जाता है। उसके दर्शन स्पर्श भाषण एवं चिंतन से भी दूसरे मनुष्य परम पवित्र बन जाते हैं। वास्तव में गीता के समान संसार में यज्ञ, दान, तप, तीर्थ, व्रत, संयम और उपवास आदि कुछ भी नहीं है। शिक्षा, मानव जीवन का आधार स्तंभ है। ज्ञान, कौशल और मूल्यों का समावेश करते हुए, शिक्षा हमें जीवन में सफलता प्राप्त करने और एक

बेहतर समाज का निर्माण करने में मदद करती है। ये आधार शिक्षा को मजबूत और प्रभावी बनाते हैं। भगवद्गीता में शिक्षा को केवल बौद्धिक विकास का साधन नहीं बल्कि आध्यात्मिक ज्ञान और आत्म-साक्षात्कार का मार्ग बताया गया है। शिक्षा का उद्देश्य बाह्य ज्ञान के साथ-साथ नैतिक मूल्यों और आदर्शों का विकास करना भी शिक्षा का अर्थ केवल विद्यार्जन नहीं बल्कि आत्म-विकास, स्वधर्म पालन, निष्काम कर्म और सर्वभूत समदर्शिता की प्राप्ति भी है। शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य को उच्च आदर्शों से परिपूर्ण बनाना और आत्म साक्षात्कार की अवस्था में पहुंचाना है। है। आज हमें भी अपने शिक्षा प्रणाली में इन्हीं सिद्धांतों को आत्मसात करने की आवश्यकता है। इस दिशा में प्रगति ही देश और समाज के विकास का मूल आधार होगी। भारतीय संस्कृति को सदैव प्रकाश और शक्ति का स्रोत मन गया है जो कि हमारे शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक शक्तियों और उपकरणों के प्रगतिशील और समन्वित विकास के द्वारा हमारी प्रकृति को रूपांतरित करती है और श्रेष्ठ बनाती है। भारत में शिक्षा की आध्यात्मिक परम्परा को वर्तमान काल में भी देखा जा सकता है। भारतीय शिक्षा दार्शनिकों ने अपने शिक्षा दर्शन में आदर्शवाद एवं प्रयोजनवाद, मानववाद और बुद्धिवाद कि अनेकता में एकता का समन्वय प्रस्तुत किया है। श्रीमद्भगवद्गीता को विश्व में भारतीय वेदांत का सर्वश्रेष्ठ योगदान माना जाता है। इसी दृष्टिकोण के सिद्धांत पर मनुष्य अपने व्यक्तित्व को सुद्रण बनाकर परम लक्ष्य प्राप्त कर पायेगा। विद्यालय में विद्यार्थिओं के मूल्यों का विकास होगा और उनके व्यव्हार को नियंत्रित निर्देशित करने वाले तत्त्व प्राप्त हो सकेंगे। इसी प्रकार उनके व्यक्तित्व विकास में नैतिक, सामाजिक, आध्यात्मिक एवं शैक्षिक मूल्यों के प्रभाव का अध्ययन किया जाएगा। विद्यार्थिओं के सभी गुणों जैसे धैर्य, प्रेम, संतोष, दया, त्याग आदि का उचित संतुलन तथा आध्यात्मिक मूल्यों के विकास द्वारा बहुत सी समस्याओं का निराकरण होगा। मूल्य मानव जीवन कि सार्थकता है, उनका धर्म है एवं उनका अस्तित्व है। मूल्यों का ज्ञान एवं आचरण हमारे लिए आवश्यक है। हमारे लिए मूल्यों का ज्ञान ही पर्याप्त नहीं है अपितु मूल्यों को आचरण में लाना अधिक महत्वपूर्ण है।

II. जीवन मूल्य

जीवन मूल्य वे सिद्धांत और आदर्श होते हैं जो हमारे जीवन को दिशा प्रदान करते हैं। यह मूल्य हमें यह तय करने में मदद करते हैं कि हम कैसे जीना चाहते हैं, हम दूसरों के साथ कैसे व्यवहार करते हैं, और हम दुनिया में अपना क्या योगदान देना चाहते हैं। मजबूत जीवन मूल्य एक सार्थक और संतुष्ट जीवन जीने की नींव रखते हैं। जीवन मूल्य वे आदर्श और सिद्धांत हैं जो हमारे व्यवहार, विचारों और कर्मों को निर्देशित करते हैं। जीवन मूल्य हमारी सफलता और संतुष्टि का आधार हैं, इसलिए उन्हें आत्मसात करना और पालन करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। ईमानदारी, निष्ठा और सच्चाई जैसे जीवन मूल्य हमें नैतिक रूप से जीने की प्रेरणा देते हैं। यह मूल्य हमें संघर्ष के समय भी सही रास्ते पर बने रहने का मार्गदर्शन करते हैं। अनुशासन, समय प्रबंधन और आत्म-अनुशासन जैसे जीवन मूल्य हमें प्रभावी और कुशल बनने में सहायता करते हैं। यह मूल्य हमें अपने जीवन में व्यवस्था लाने और प्राथमिकताओं को निर्धारित करने में मदद करते हैं। सहिष्णुता, समानता और करुणा जैसे मूल्य हमें अन्य लोगों के साथ सौहार्दपूर्ण और सम्मानजनक व्यवहार करने की शिक्षा देते हैं। यह मूल्य हमारे सामाजिक संबंधों को मजबूत करते हैं और शांतिपूर्ण समाज के निर्माण में योगदान करते हैं। जीवन मूल्य हमारे जीवन की दिशा निर्धारित करते हैं और हमें एक संपूर्ण व्यक्ति बनने में सहायता करते हैं। इन्हें आत्मसात करना और निरंतर पालन करना सफल और संतुष्ट जीवन जीने की कुंजी है।

"अनुद्विग्नकरुणस्य दुःखदुःखिसमाचरेत्।
सखा हितवरारम्भाः क्षान्तिरवरणादयः॥"(श्रीमद्भगवद्गीता 16.3)

अर्थात : ऐसा व्यक्ति दयालु होता है, दुःखी जनों पर करुणा करता है, सुख-दुःख में समान रहता है, सबका मित्र है, हित करने में तत्पर रहता है, क्षमाशील होता है। यह श्लोक विद्यार्थियों को करुणा, समभाव, मित्रता, परोपकार, क्षमाशीलता, सहिष्णुता, दयालुता, विनम्रता, सद्भावना, सहानुभूति, उदारता, संवेदनशीलता, निःस्वार्थता, धैर्य एवं नैतिकता जैसे जीवन मूल्यों को आत्मसात करने की प्रेरणा देता है।

III. शोध के उद्देश्य

श्रीमद्भगवद्गीता में अन्तर्निहित जीवन मूल्यों का माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास पर प्रभाव का अध्ययन करना।

IV. शोध की परिकल्पना

H01 - श्रीमद्भगवद्गीता में अन्तर्निहित जीवन मूल्यों का माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

H02 - श्रीमद्भगवद्गीता में अन्तर्निहित जीवन मूल्यों का माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक गुणों के विकास पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

H03 - श्रीमद्भगवद्गीता में अन्तर्निहित जीवन मूल्यों का माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आध्यात्मिक गुणों के विकास पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

V. शोध प्राविधि

प्रस्तुत शोध कार्य में विवरणात्मक शोध के अंतर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। न्यादर्शन में भोपाल जिले के **20** शासकीय एवं **20** अशासकीय विद्यालयों का चयन किया गया था। जिसमें कक्षा नवमी एवं दसवीं के **1000** विद्यार्थियों के यादृच्छिक न्यादर्श में से **860** विद्यार्थियों से जानकारी प्राप्त हुई। प्रदत्तों के संकलन हेतु जीवन मूल्यों से सम्बंधित स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया जिसमें कुल बारह प्रश्न थे।

VI. विश्लेषण एवं व्याख्या

विद्यार्थियों से प्राप्त प्रश्नावली का प्रश्नवार विश्लेषण किया गया जिसका विवरण तालिका क्रमांक **1** में अवलोकनीय हैं।

तालिका : **01 –** श्रीमद्भगवद्गीता के जीवन मूल्यों का माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के प्रभाव का विश्लेषण

क्र.	पद	हाँ	प्रतिशत	नहीं	प्रतिशत	अनिश्चित	प्रतिशत
1.	आप प्रतिदिन प्रार्थना करते हैं।	505	58.7	345	40.2	10	1.1
2.	आपको विद्यालय में श्रीमद्भगवद्गीता के श्लोकों की शिक्षा दी जाती है।	437	50.8	410	47.7	13	1.5
3.	आप परोपकार और दयालुता जैसे मूल्यों को अपने जीवन में अपनाते हैं।	440	51.2	414	48.1	6	0.7
4.	आप अपने माता-पिता और बड़ों का सम्मान करते हैं।	813	94.5	46	5.4	1	0.1
5.	आप सत्य और अहिंसा जैसे मूल्यों को महत्व देते हैं।	844	98.1	9	1	7	0.9
6.	आपके अंदर सही और गलत के बीच अंतर करने और सही का चुनाव करने की क्षमता है।	801	93.1	57	6.6	2	0.3
7.	आप अपने जीवन में अनुशासन को एक महत्वपूर्ण गुण मानते हैं।	717	83.4	132	15.3	11	1.3
8.	आप कठिन परिस्थितियों में भी सकारात्मक सोच रखते हैं।	687	79.9	162	18.8	11	1.3
9.	आप अपने जीवन के हर कार्य में समय का प्रबंधन करते हैं।	505	58.7	344	40.1	11	1.2
10.	आप सदैव अपने कार्यों में नैतिकता और ईमानदारी का पालन करते हैं।	742	86.3	110	12.8	8	0.9
11.	आप समाज और प्रकृति के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाने में विश्वास करते हैं।	787	91.5	72	8.4	1	0.1
12.	आप अपने लक्ष्यों और संकल्पों को पूरा करने के लिए दृढ़ता से काम करते हैं।	626	72.8	229	26.6	5	0.6

व्याख्या

- 58.7% विद्यार्थी प्रार्थना करते हैं, जिससे आत्मसंयम और आत्म-नियंत्रण जैसे व्यक्तित्व के गुणों का विकास होता है।
- 50.8% विद्यार्थी श्रीमद्भगवद्गीता के श्लोकों का पठन करते हैं, जिससे धार्मिक ज्ञान, नैतिकता और आत्मचिंतन जैसे व्यक्तित्व के गुणों का विकास होता है।
- 51.2% विद्यार्थी परोपकार और दयालुता जैसे मूल्यों को अपनाते हैं, जिससे सहृदयता, मदद की भावना और करुणा जैसे व्यक्तित्व के गुणों का विकास होता है। श्रीमद्भगवद्गीता का यह श्लोक विद्यार्थियों को निःस्वार्थ सेवा और उदारता की ओर प्रेरित करते हैं, जिससे वे एक अच्छे नागरिक और समाज के प्रति उत्तरदायी व्यक्ति बनते हैं।

"अद्वेष्टा सर्वभूतानां मैत्रः करुण एव च।
निर्ममो निरहङ्कारः समदुःखसुखः क्षमी॥" (श्रीमद्भगवद्गीता 12.13)

- 94.5% विद्यार्थी आदर और संस्कारों को महत्व देते हैं, जिससे विनम्रता और कृतज्ञता जैसे व्यक्तित्व के गुणों का विकास होता है।
- 98.1% विद्यार्थी सत्यनिष्ठा और शांतिपूर्ण व्यवहार अपनाते हैं, जिससे न्यायप्रियता और ईमानदारी जैसे व्यक्तित्व के गुणों का विकास होता है।
- 93.1% विद्यार्थी नैतिक निर्णय लेने की क्षमता रखते हैं, जिससे आत्मनिर्णय और आत्म-जागरूकता जैसे व्यक्तित्व के गुणों का विकास होता है।
- 83.4% विद्यार्थी अनुशासन को महत्वपूर्ण मानते हैं, जिससे आत्म-नियंत्रण और समय प्रबंधन जैसे व्यक्तित्व के गुणों का विकास होता है। श्रीमद्भगवद्गीता का यह श्लोक विद्यार्थियों को अपने कर्तव्यों का पालन करते समय परिणाम की चिंता किए बिना, नियमितता, संयम और संतुलन बनाए रखने के लिए प्रेरित करता है।

"योगस्थः कुरु कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा धनञ्जय।
सिद्ध्यसिद्ध्योः समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते॥" (श्रीमद्भगवद्गीता 2.48)

- 79.9% विद्यार्थी कठिन परिस्थितियों में भी सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं, जिससे आत्मविश्वास और मानसिक दृढ़ता जैसे व्यक्तित्व के गुणों का विकास होता है।
- 58.7% विद्यार्थी अपने कार्यों में समय का सदुपयोग करते हैं, जिससे योजनाबद्धता और लक्ष्य निर्धारण सुदृढ़ जैसे व्यक्तित्व के गुणों का विकास होता है।
- 86.3% विद्यार्थी कार्यों में नैतिकता और कर्तव्यनिष्ठा अपनाते हैं, जिससे विश्वसनीयता और सामाजिक प्रतिष्ठा जैसे व्यक्तित्व के गुणों का विकास होता है।
- 91.5% विद्यार्थी समाज और प्रकृति के प्रति जिम्मेदार हैं, जिससे सामूहिक हित और जागरूकता जैसे व्यक्तित्व के गुणों का विकास होता है। श्रीमद्भगवद्गीता के इस श्लोक का पठन करने से विद्यार्थियों के अंतर्गत समाज के कल्याण के लिए कार्य करने की प्रेरणा मिलती है।

"यज्ञार्थात्कर्मणोऽन्यत्र लोकोऽयं कर्मबन्धनः।
तदर्थं कर्म कौन्तेय मुक्तसङ्गः समाचर॥" (श्रीमद्भगवद्गीता 3.9)

- 72.8% विद्यार्थी अपने संकल्प पूरे करने के लिए मेहनत करते हैं, जिससे आत्म-प्रेरणा और परिश्रम जैसे व्यक्तित्व के गुणों का विकास होता है।

VII. निष्कर्ष

- विद्यालयों में प्रतिदिन प्रार्थना सभा हो रही है। प्रार्थना में समय-समय पर गीता के श्लोकों का वाचन किया जाता है जिससे विद्यार्थियों में आत्मानुशासन, धैर्य, करुणा, प्रेम, आत्मसंयम एवं आत्म नियंत्रण के गुणों का विकास हो रहा है।
- विद्यालयों में दयालुता जैसे गीता के जीवन मूल्यों के सुनने एवं समझने से परोपकारिता एवं दयालुता के गुणों का विकास हो रहा है।
- विद्यार्थी अपने माता-पिता और बड़ों का सम्मान करते हैं जिससे आपसी सेवा भाव, सहयोग एवं नम्रता के गुणों का विकास हो रहा है।
- विद्यार्थियों में सत्य और अहिंसा जैसे जीवन मूल्यों के आत्मसात से समस्त प्राणियों में दया की भावना एवं सत्यनिष्ठता के गुणों का विकास हो रहा है।

- विद्यार्थियों के अंदर गीता के जीवन मूल्यों से सही और गलत के बीच अंतर करने और सही का चुनाव करने की क्षमता एवं निर्णय क्षमता के गुण विकसित हो रहे है।
- विद्यार्थियों में अनुशासन जैसे गीता के जीवन मूल्यों से धैर्य, साहस, शिष्टाचार, कठिन परिश्रम, आत्मानुशासन एवं सकारात्मक सोच आदि जैसे गुणों का विकास हो रहा है।
- विद्यार्थियों में गीता के जीवन मूल्यों से समय-प्रबंधन, नैतिकता और ईमानदारी, दूसरे की भावनाओं का सम्मान, लक्ष्यों एवं संकल्पों को पूरा करने की दृढ़ता, दूसरों की भलाई के लिए निस्वार्थ काम आदि गुणों का विकास हो रहा है ।
- गीता के जीवन मूल्य विद्यार्थियों को उनके व्यक्तित्व विकास में सम्पूर्णता प्रदान करते हैं और उन्हें एक समर्थ, मानसिक रूप से सशक्त और संवेदनशील व्यक्ति के रूप में ढालते हैं।
- गीता के जीवन मूल्य जैसे - निष्काम कर्मयोग, समताभाव, आत्मसंयम, करुणा और स्वयं पर विश्वास, विद्यार्थियों को मानसिक, भावनात्मक और सामाजिक रूप से सशक्त बनाते हैं।
- श्रीमद्भगवद्गीता के श्लोकों के पढ़ने से जीवन मूल्यों को समझने और अभ्यास करने से विद्यार्थियों में आंतरिक शांति और मानसिक संतुलन में वृद्धि होती है।
- श्रीमद्भगवद्गीता के सिद्धांतों के माध्यम से विद्यार्थियों में धैर्य और संयम विकसित होता है। जो जीवन के कठिन समय में उनके मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य को बनाए रखने में मदद करता है। यह उन्हें अपने जीवन में चुनौतियों का सामना करने के लिए प्रेरित करता है।
- विद्यार्थियों में गीता के जीवन मूल्यों से अपने जीवन को सकारात्मक और प्रेरणादायक बनाने में सहायता मिल रही है।

VIII. सुझाव

- विद्यालयीन पाठ्यक्रम में श्रीमद्भगवद्गीता के प्रेरणादायी श्लोकों को शामिल किया जाना चाहिए।
- शिक्षक प्रशिक्षण के समय शिक्षकों को श्रीमद्भगवद्गीता के प्रभावी और प्रेरक श्लोकों का अध्यापन करने के लिए प्रशिक्षित किया जाना चाहिए।
- विद्यालयों में साहित्यिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम के अंतर्गत श्रीमद्भगवद्गीता के जीवन मूल्यों पर आधारित श्लोकों का विशेष रूप से उद्धरण दिया जाना चाहिए।
- पालक शिक्षक संघ के बैठक में शिक्षकों द्वारा बालकों को श्रीमद्भगवद्गीता के श्लोकों का विद्यार्थियों के समक्ष अध्याय वार वाचन किया जाना चाहिए ।
- विद्यालयों में संस्था प्रधान द्वारा दो-तीन माह के अंतराल में विषय विशेषज्ञों एवं श्रीमद्भगवद्गीता मनीषियों द्वारा गीता ज्ञान का प्रवचन कराया जाना चाहिए।
- शिक्षकों द्वारा समय-समय पर बाल सभा में श्रीमद्भगवद्गीता के श्लोकों की प्रतियोगिता कराई जानी चाहिए जिससे विद्यार्थियों में गीता श्लोकों को स्मरण करने की प्रतिस्पर्धा जाग्रत हो।
- विद्यालयों में 'गीता अध्ययन एवं जीवन मूल्य' कार्यशाला का आयोजन किया जाए, समय-समय पर विद्यार्थियों के लिए कार्यशालाएं आयोजित कर गीता के धार्मिक, नैतिक, एवं आध्यात्मिक पहलुओं को समझाने पर बल दिया जाना चाहिए।
- विद्यार्थियों में जीवन मूल्यों से जुड़े निबंध लेखन, वाद-विवाद और प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाना चाहिए।
- विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य को मजबूत करने के लिए भावनात्मक स्वास्थ्य से संबंधित विशेष कार्यशालाएँ आयोजित की जाएं।
- विद्यार्थियों को सामाजिक और नैतिक मूल्यों के प्रति जागरूक करने के लिए परिवार में नैतिक कहानियों, प्रेरक प्रसंगों और आध्यात्मिक वार्ताओं को स्थान देना चाहिए।

सन्दर्भ

- कुमार, प्रवीन (2019). ***वर्तमान युग में श्रीमद्भगवद्गीता की सार्वभौमिकता*** , Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education (JASRAE), Volume 16.
- गीता (2020). ***वर्तमान में श्रीमद्भगवद्गीता की प्रासंगिकता : एक विवेचन,*** Innovation the Research Concept, Volume 5, हरियाणा : बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, रोहतक।
- गुप्ता, एस. पी एवं गुप्ता, अलका (2011). ***उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान*** इलाहबाद **:** शारदा पुस्तक भवन।
- गौतम, संध्या (2022). ***मानवीय मूल्यों के सन्दर्भ में श्रीमद्भगवद्गीता***, International Journal of Applied Research (IJAR), Volume 9, हरियाणा : आर्य गर्ल्स कॉलेज, अम्बाला।
- चौधरी, मंजू (2020). ***वर्तमान में श्रीमद्भगवद्गीता के नैतिक विचारों की प्रासंगिकता,*** International Journal of Applied Research, Volume 6, उत्तर प्रदेश : महिला महाविद्यालय, बिजनौर।
- जयदयाल गोयन्दका, ***श्रीमद्भगवद्गीता तत्त्वविवेचनी*** हिंदीटिकासहित गीता प्रेस, गोरखपुर।
- पोददार, विजयलक्ष्मी एवं शाही, शुष्मा (2015). ***श्रीमद्भगवद्गीता के जीवन मूल्यों का वर्तमान शिक्षा प्रणली में योगदान,*** UDGAM VIGYATI, Volume 2, इंदौर : एम. के. एच. एस. गुजरती कन्या महाविद्यालय।
- बियानी, प्रियंका (2022). ***श्रीद्भगवद्गीता शिक्षा दर्शन में निहित मूल्यों का समीक्षात्मक अध्ययन***, International Journal of Creative Research Thoughts (IJCRT), Volume 10, राजस्थान : श्री जगदीशप्रसाद झाबरमल टीबड़ेवाला विश्वविद्यालय, झुंझुनू।